Lecturer: Dr. Indrasen Singh

Subject: History
Sem: 3rd

DR INDRASEN SINGH

HISTORY(H) SEM – III PAPER – CC-7

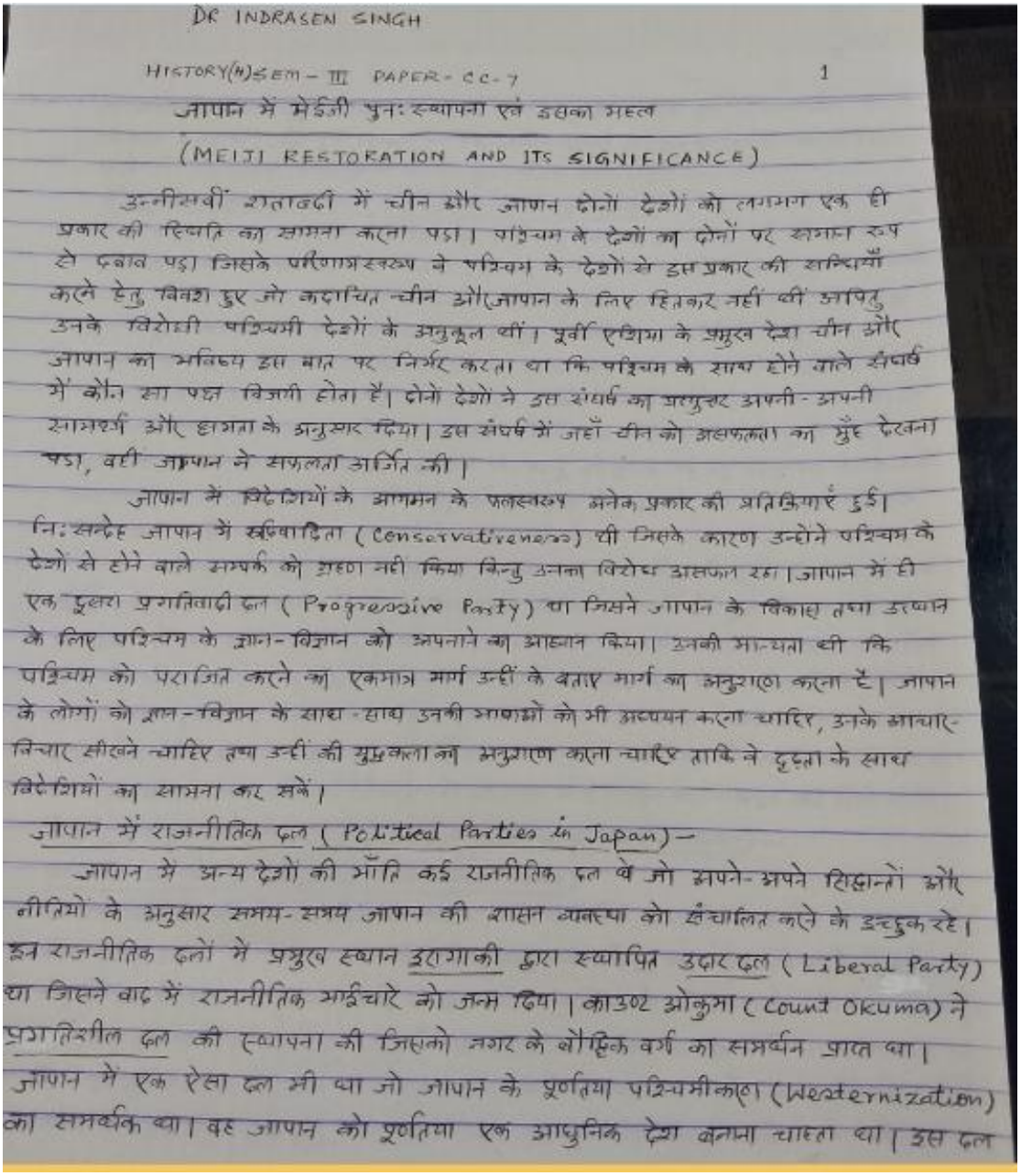

जापान में मेइजी पुनः स्थापना एवं इसका महत्व

(MEIJI RESTORATION AND ITS SIGNIFICANCE)

उन्नीसवीं शताब्दी में चीन और जापान दोनों देशों को लगभग एक ही प्रकार की स्थिति का सामना करना पड़ा। पश्चिम के देशों का दोनों पर समान रूप से दबाव पड़ा जिसके परिणामस्वरूप वे पश्चिम के देशों से इस प्रकार की सन्धियाँ करने हेतु विवश हुए जो कदाचित चीन और जापान के लिए हितकर नहीं थीं अपितु उनके विरोधी पश्चिमी देशों के अनुकूल थीं। पूर्वी एशिया के प्रमुख देश चीन और जापान का भविष्य इस बात पर निर्भर करता था कि पश्चिम के साथ होने वाले संघर्ष में कौन सा पक्ष विजयी होता है। दोनों देशों ने इस संघर्ष का प्रत्युत्तर अपनी-अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार दिया। इस संघर्ष में जहाँ चीन को असफलता का मुँह देखना पड़ा, वहीं जापान ने सफलता अर्जित की।

जापान में विदेशियों के आगमन के फलस्वरूप अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएं हुईं। निःसन्देह जापान में रूढ़िवादिता (Conservativeness) थी जिसके कारण उन्होंने पश्चिम के देशों से होने वाले सम्पर्क को ग्रहण नहीं किया किन्तु उनका विरोध असफल रहा। जापान में ही एक दूसरा प्रगतिवादी दल (Progressive Party) था जिसने जापान के विकास तथा उत्थान के लिए पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान को अपनाने का आह्वान किया। उनकी मान्यता थी कि पश्चिम को पराजित करने का एकमात्र मार्ग उन्हीं के बताए मार्ग का अनुसरण करना है। जापान के लोगों को ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ उनकी भाषाओं को भी अध्ययन करना चाहिए, उनके आचार-विचार सीखने चाहिए तथा उन्हीं की युद्धकला का अनुसरण करना चाहिए ताकि वे दृढ़ता के साथ विदेशियों का सामना कर सकें।

जापान में राजनीतिक दल (Political Parties in Japan) –

जापान में अन्य देशों की भाँति कई राजनीतिक दल थे जो अपने-अपने सिद्धान्तों और नीतियों के अनुसार समय-समय जापान की शासन व्यवस्था को संचालित करने के इच्छुक रहे। इन राजनीतिक दलों में प्रमुख स्थान इटागाकी द्वारा स्थापित उदार दल (Liberal Party) था जिसने बाद में राजनीतिक भाईचारे को जन्म दिया। काउण्ट ओकुमा (Count Okuma) ने प्रगतिशील दल की स्थापना की जिसको नगर के बौद्धिक वर्ग का समर्थन प्राप्त था। जापान में एक ऐसा दल भी था जो जापान के पूर्णतया पश्चिमीकरण (Westernization) का समर्थक था। वह जापान को पूर्णतया एक आधुनिक देश बनाना चाहता था। इस दल

Lecturer: Dr. Indrasen Singh **Subject:** History
Sem: 3rd

के समर्थक, जापान को पश्चिमी सभ्यता के रंग में ढालकर उसके पूर्ण पश्चिमीकरण में विश्वास रखते थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि जापान अपनी अद्भुत क्षमता के कारण ऐसा करने में सक्षम है। 1868 ई० में मेइजी पुनर्स्थापना इसी प्रवृति का परिणाम थी।

शोगून के शासन का विरोध (Opposition of Shogun Rule)–

जिस समय जापान पर पश्चिम के देशों का दबाव पड़ रहा था, उस समय वहाँ की राज्य–व्यवस्था विलक्षण प्रकार की थी। मिकाडो (सम्राट) राज्य का अध्यक्ष होता था किन्तु उसके अधिकार अत्यन्त सीमित थे। वह क्योटो में एकान्तवास करता था। अतः राज्य का वास्तविक शासक शोगून था। वस्तुतः स्वीकार यह किया जाता था कि शोगून मिकाडो का प्रतिनिधि है किन्तु राज्य की समस्त महत्वपूर्ण शक्तियों पर अधिकार होने के कारण उसके महत्व में अत्यधिक वृद्धि हो गयी थी। 1853 ई० मे जब जापान का द्वार खुला तब विदेशियों ने मिकाडो के स्थान पर शोगून के साथ सन्धियाँ की जो शोगून की महत्वपूर्ण स्थिति की परिचायक है। जापान में विभिन्न कुलों के सामन्त थे जो पर्याप्त शक्तिशाली थे, परन्तु शोगून के पद पर तोकुगावा के सामन्तों का अधिकार था। दूसरे सामन्त जैसे चोशू एवं सातसूमा तोकूगावा के प्रति कोई आदर का भाव नही रखते थे और उसे इस पद से हटाने मे रुचि रखते थे।

जापान मे तोकुगावा शोगून की स्थिति उस समय और भी दुर्बल हो गयी जब वहाँ विदेशियों ने प्रवेश करके अपने पैर जमाने चाहे। इससे विरोधी सामन्तों को कुल मिलाकर शोगून को पदच्युत करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। जापान द्वारा विदेशियों को देश मे प्रवेश की आज्ञा दिये जाने और उनसे सन्धि करने के कारण विदेशियों के विरुद्ध एक ऐसी भावना फैली जिसके कारण स्थान-स्थान पर हिंसात्मक विद्रोह फूट पड़े। धीरे-धीरे यह आन्दोलन उग्र रूप धारण करता गया और अन्त में इसने एक राजनीतिक स्वरूप ग्रहण करके यह माँग करनी प्रारम्भ कर दी कि, राज्य की समस्त शक्तियाँ मिकाडो को दी जायें और शोगून को पदच्युत कर दिया जाये।

मेइजी पुनःस्थापना के कारण (Causes of Meiji Restoration) –

आन्तरिक असंतोष (Internal Dissatisfaction)–

पश्चिमी देशों के जापान में प्रवेश के समय राज्य में सर्वत्र आन्तरिक असन्तोष व अव्यवस्था व्याप्त थी। जापान के विभिन्न सामन्ती परिवार तोकुगावा शोगून के परिवार के विरोधी बने हुए थे। शोगून ने अपने दण्डात्मक कार्यों के द्वारा सामन्त परिवार को पीड़ित करके उन्हें कष्ट पहुँचाया। जापान के एक कानून 'सान्किन कोताई' के अनुसार सामन्तो को यह अधिकार प्राप्त नहीं था कि वे शोगून के आज्ञा के बिना किले बना सकें, उनकी मरम्मत करा सकें, अथवा सिक्के ढलवा सकें, साथ ही विवाह करने के लिए उन्हें शोगून की पूर्व आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती थी।

KARIM CITY COLLEGE
Jamshedpur, Jharkhand (INDIA)

Lecturer: Dr. Indrasen Singh

Subject: History
Sem: 3rd

To be continued tomorrow.